

SMT. MALTI JOSHI

Smt. Malti Joshi is one of the leading Hindi story writers. Her stories have been published in several leading Hindi Magazines and newspapers since early seventies. She has more than 45 books to her credit and translations of her stories have been published in several Indian languages as well as English, Japanese and Russian. She continues to write even today at the age of 84 years.

2. Born on June 4, 1934, in a Marathi speaking family in 1934, Smt. Joshi, did her schooling through various villages of Madhya Pradesh and later studied at Holkar College, lndore and completed M.A. Degree in Hindi in 1956. She started writing poetry from her teenage and later graduated to stories for teenagers and adults. Her inspiration had been her professor and mentor, Dr. Shivmangal Singh "Suman"; a noted Hindi poet and professor at Indore.

3. Smt. Joshi initially wrote stories for teenage children, in 1969 her story won prize in a contest and was published in 'Parag' popular children magazines. Later she switched to writing stories and short novels. Her first story was published in 1971 by Dharmayug, a prestigious Hindi weekly Hindi then (Times of India publication), with that she became a household name for all Hindi readers across country.

4. Smt. Joshi's stories and novels have been published in all leading Hindi publications like Dharmayug, Saptahik Hindustan, Manorama, Kadambini, Sarika etc. From 1971 till date she has been serving Hindi literature with her stories. Some of her stories were adapted for tele serials on Doordarshan, earlier Akashwani adapted several of her stories for drama. Even today she writes for contemporary periodicals and news magazines Navnit, Kathabimb, Samavartan, Madhurima, Tarang etc.

5. Smt. Joshi is known for her simple and sensitive language. Her stories typically depict the life struggle and finer elements of relationships in middle class households. Ladies in her stories always have a distinctive and decisive role. Many readers identify the lead characters in Malti ifs stories with themselves.

6. Smt. Joshi started the trend of Kathakathan- rendering her stories to audience, not so known amongst Hindi audiences. Even at this age, she recites her stories totally out of memory without a book or notes.

7. Smt. Joshi has received several honours and awards including Rashtriya Maithalisharan Gupt Sanman for 2013-14 from M.P. Govt, Vanmali Sanman in same year; Kathabimb, a leading magazine conferred her with Kamleshwar Smruti Purskar in 2016; in 2011 she received Dushyant Kumar Sahitya Sanman, in the same year she also received Ojaswini Sanman; MP Govt honoured her with Shikhar Sanman in 2006. She also received Bhavbhuti Alankaran from Madhya Pradesh Sahitya Sammelan in 1999.



श्रीमती मालती जोशी

श्रीमती मालती जोशी अग्रणी हिन्दी कहानीकारों में से एक हैं। सत्तर के दशक की शुरूआत से ही आपकी कहानियां कई एक अग्रणी हिन्दी पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में प्रकाशित होती रही हैं। आपको 45 से अधिक पुस्तकों के लेखन का श्रेय जाता है तथा आपकी कहानियों का अनुवाद कई एक भारतीय भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेजी, जापानी और रसियन भाषाओं में प्रकाशित हुआ है। आप, आज 84 वर्ष की उम्र में भी अपना लेखन कार्य जारी किए हुए हैं।

2. आपका जन्म 04 जून, 1934 को एक मराठी भाषा-आषी परिवार में हुआ था। आपने मध्य प्रदेश के विभिन्न गांवों के स्कूलों में अपनी पढ़ाई की और बाद में होल्कर कॉलेज, इंदौर में अध्ययन किया तथा वर्ष 1956 में, हिन्दी में एम.ए. की उपाधि अर्जित की। आपने किशोरावस्था से ही कविताएं लिखना आरंभ कर दिया था और बाद में क्रमिक रूप से किशोरवय एवं वयस्कों के लिए कहानी लिखना शुरू किया। एक जाने-माने हिन्दी कवि और इंदौर में प्रोफेसर डा. शिवमंगल सिंह ''सुमन'' आपके प्रोफेसर एवं गुरू और आपके प्रेरणास्रोत रहे।

3. आपने शुरूआत में किशोरवय बच्चों के लिए कहानियां लिखीं,वर्ष 1969 में, एक प्रतियोगिता में आपकी कहानी ने पुरस्कार जीता और बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका 'पराग' में प्रकाशित हुई। बाद में आप कहानी और लघु- उपन्यास के लेखन के प्रति उन्मुख हुईं। आपकी पहली कहानी 1971 में हिन्दी की प्रतिष्ठित साप्ताहिकी 'धर्मयुग'(तत्समय टाइम्स ऑव इंडिया का प्रकाशन) द्वारा प्रकाशित की गई, इसके साथ ही आप पूरे देश में सभी हिन्दी पाठकों के लिए सुपरिचित नाम बन गईं।

4. आपकी कहानियां और उपन्यास समस्त अग्रणी हिन्दी प्रकाशनों जैसे - धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, मनोरमा, कादम्बिनी, सारिका आदि में प्रकाशित हुईं। वर्ष 1971 से अब तक आप अपनी कहानियों के द्वारा हिन्दी साहित्य की सेवा कर रही हैं। आपकी कुछेक कहानियों को दूरदर्शन पर टीवी सीरियल्स के लिए रूपांतरित किया गया था, हाल ही में आकाशवाणी ने नाटक के लिए आपकी कई कहानियों को रूपांतरित किया है। आप आज भी समकालीन पत्रिकाओं और न्यूज मैगजीन्स-नवनीत, कथाबिम्ब, समावर्तन, मधुरिमा, तरंग आदि के लिए लिखती हैं।

5. आप, अपनी सरल और संवेदनशील भाषा के लिए विख्यात हैं। आपकी कहानियां, प्रतीकात्मक रूप से जीवन-संघर्ष तथा मध्यम वर्गीय परिवारों के रिश्तों के सूक्ष्मतर तत्वों को चित्रित करती हैं। आपकी कहानियों में हमेशा, महिलाओं की एक विशिष्ट एवं निर्णायक भूमिका होती है। बहुत सारे पाठक, आपकी कहानियों में मालती के अग्रणी किरदारों के साथ अपना घनिष्ठ संबंध स्थापित कर लेते हैं।

6. आपने अपनी कहानियों को ऐसे श्रोताओं,जिनके बीच ये अधिक मशहूर नहीं हैं, को अपनी कहानियां प्रस्तुत करते हुए कथा-कथन का चलन शुरू किया। इस उम्र में भी आप अपनी कहानियां किसी पुस्तक अथवा नोट के बिना पूरी तरह से याददाश्त के बल पर सुनाती हैं।

7. आपको मध्यप्रदेश सरकार से 2013-14 के लिए राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, उसी वर्ष वनमाली सम्मान; वर्ष 2016 में एक अग्रणी पत्रिका-'कथाबिम्ब' ने आपको कमलेश्वर स्मृति पुरस्कार प्रदान किया; वर्ष 2011 में आपको दुष्यंत कुमार साहित्य सम्मान प्राप्त हुआ और उसी वर्ष आपको ओजस्विनी सम्मान से भी नवाज़ा गया; मध्य प्रदेश सरकार ने वर्ष 2006 में शिखर सम्मान से सम्मानित किया। उपर्युक्त पुरस्कारों के अतिरिक्त आपको कई और सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए। आपको वर्ष 1999 में मध्य प्रदेश साहित्य सम्मेलन द्वारा भवभूति अलंकरण से भी विभूषित किया गया।